अमुक दिन आइए

आफन्ती ने एक छोटी-सी रँगाई वर्कशॉप खोली और गाँववासियों के लिए कपड़ा रँगना शुरू कर दिया। सब लोग उसकी रँगाई की तारीफ करने लगे। यह सुनकर एक सेठ को बहुत जलन महसूस होने लगी। वह आफन्ती को परेशान करने के इरादे से कपड़े का टुकड़ा लेकर आफन्ती की वर्कशॉप में जा पहुँचा।

दरवाज़े के अन्दर घुसते ही सेठ बुलन्द आवाज़ में बोला:

"आफन्ती, ज़रा यह कपड़ा तो अच्छी तरह रंग दो। मैं देखना चाहता हूँ तुम्हारा हुनर कैसा है।"

आफन्ती ने पूछा, "सेठजी, आप कैसा रंग चाहते हैं?"

सेठ बोला, "रंग? मुझे सफेद, लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैंगनी रंग कतई अच्छे नहीं लगते। समझे कि नहीं?"

आफन्ती ने सेठ का मनसूबा भाँपते हुए उसके हाथ से कपड़े का टुकड़ा ले लिया।

"अच्छा, तो इसे लेने किस दिन आऊँ?" सेठ ने खुश होकर कहा।

आफन्ती ने कपड़े को अलमारी में बन्द कर उसमें ताला लगा दिया और सेठ से बोला, "इसे लेने सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को छोड़कर किसी भी दिन आ सकते हो।"

प्रश्न–1. इस कहानी को नाटक के रूप में खेलो।

प्रश्न–2. जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची है उन्हीं शब्दों के समान अर्थ वाले शब्दों को लाइन खींचकर वाक्यों से मिलाओ।

वाक्य	समान अर्थ वाले शब्द
1. लोग आफन्ती की रंगाई की तारीफ़ करने लगे।	कौशल, कला
2. यह सुनकर सेठ को बहुत जलन महसूस होने लगी।	ऊँची
3. सेठ आफन्ती को परेशान करने, कपड़े का टुकड़ा लेकर वर्कशाप गया।	प्रशंसा,
4. दरवाजे के अंदर घुसते ही सेठ बुलन्द आवाज़ में बोला।	ईर्ष्या
5. " मैं देखना चाहता हूँ, तुम्हारा हुनर कैसा है।"	प्रसन्न
6. सेठ ने खुश होकर कहा।	कारखाने

प्रश्न–3. इसी कहानी को मन से कापी में लिखना।

प्रश्न–4. नीचे के वाक्यों में इन संकेतो को लगाओ।

।(पूर्ण विराम) ? (प्रश्न वाचक) , (अल्पविराम) " " (अवतरण) चिन्ह

आफन्ती ने पूछा– सेठ जी, आप कैसा रंग चाहते हैं सेठ बोला रंग मुझे सफेद लाल नारंगी पीला हरा आसमानी नीला और बैंगनी रंग कतई अच्छे नहीं लगते समझे कि नहीं।

प्रश्न–5. सभी रंगों के नाम लिखो।

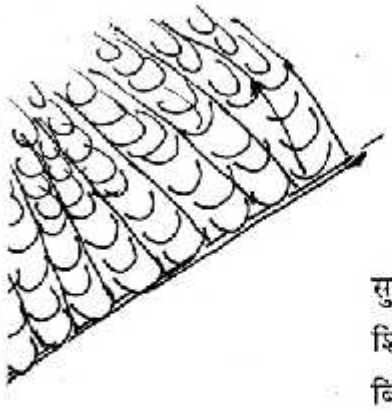

धूप

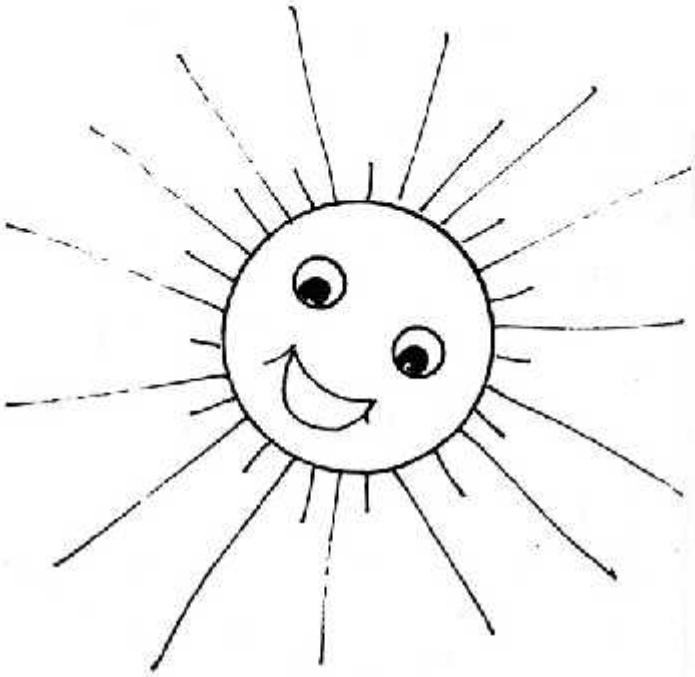

सुबह-सुबह जो आई धूप
शिखर-शिखर मुसकाई धूप
बिखर-बिखरकर छप्पर-छतपर
धरती पर छितराई धूप।

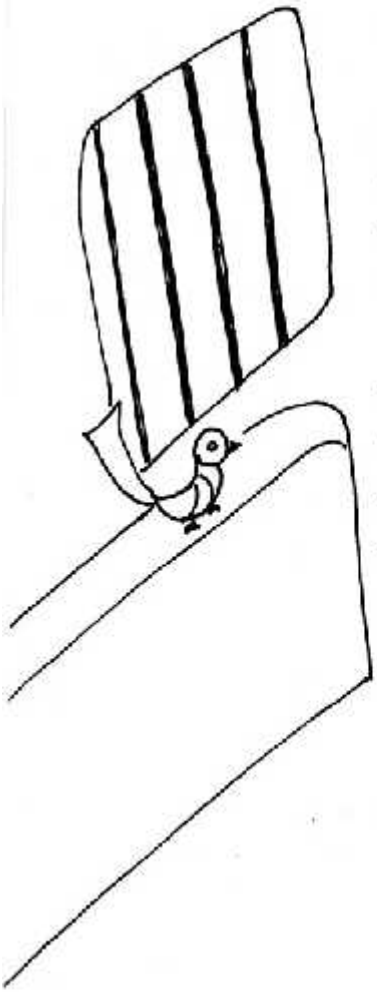

झाड़ी-झुरमुट मैदानों में,
खेत की रेत में, खलिहानों में,
डाली-डाली पर रुक-रुककर
थकी-थकी सुस्ताई धूप।

जाड़े में मन भाई धूप,
गरमी में गरमाई धूप,
तपती रहती तन झुलसाती,
बरखा में शरमाई धूप।

फूल-फूल में, कली-कली में,
धीरे-धीरे गली-गली में,
जाने कब खिड़की पर उतरी
घर में घुसी लजाई धूप।

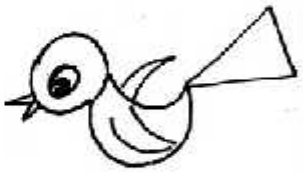

राहें छोड़ो, खिड़की खोलो,
कुछ मत बोलो, घूमो-डोलो,
हवा दवा है कण-कण चुपके
अपने आप समाई धूप।

सूरज निकला, आई धूप,
दिन भर रामदुहाई धूप,
शाम हुई सो गई कहाँ जा
अलसाई-अलसाई धूप।

विष्णुकान्त पाण्डेय

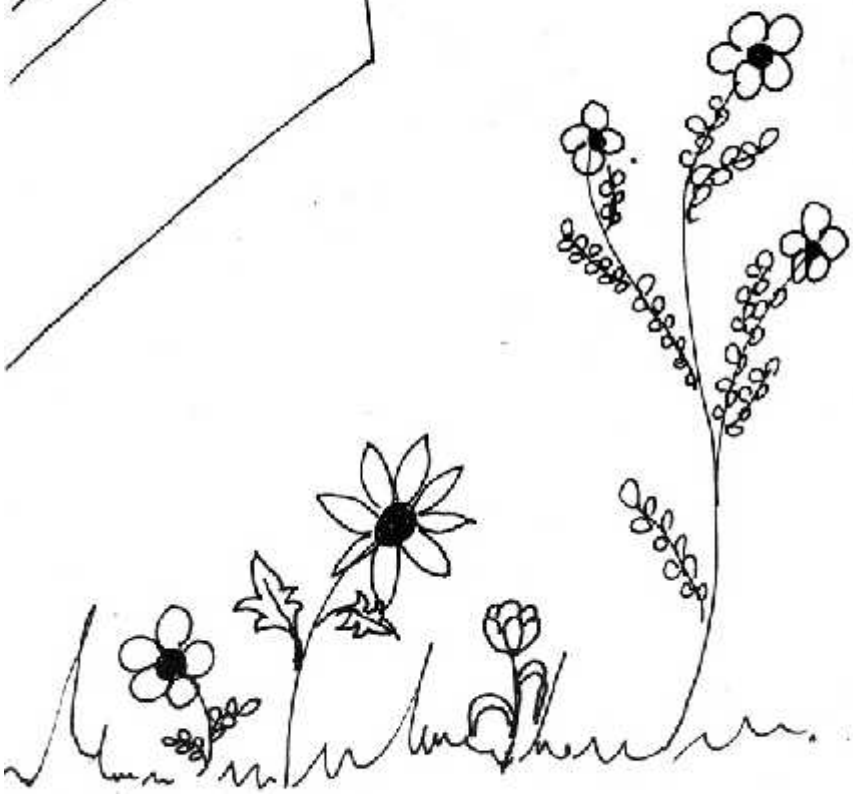

अभ्यास

1. नीचे कविता में से कुछ शब्दों के जोड़े दिए गए हैं जिनमें एक ही शब्द को दोहराया गया है। यदि तुम ध्यान से पढ़ो तो पाओगे कि शब्द को दोहराने से उसका अर्थ कुछ बदल जाता है। नीचे दी फेहरिस्त में से संज्ञा के जोड़ों को छाँटकर अलग करो और बताओ कि उन्हें दोहराने से अर्थ में क्या परिवर्तन होता है।

   डाली- डाली अलसाई- अलसाई

   गली- गली बिखर- बिखर

   कण- कण थकी- थकी

   सुबह- सुबह धीरे- धीरे

2. सूरज के चार पर्यायवाची शब्द बताओ।

3. पुस्तकालय में जाकर बड़ा शब्दकोश देखो और नीचे दिए वाक्यांशों और मुहावरों के अर्थ समझो। अब इन्हें वाक्यों में प्रयोग करो।

   (क) धूप खाना
   (ख) दौड़- धूप करना
   (ग) धूप में बाल सफ़ेद होना
   (घ) धूप सेंकना
   (ङ) धूप दिखाना
   (च) धूप चढ़ना

तुम्हारी कलम से

1. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय किसी खुले स्थान या मैदान में जाकर देखो कि तब धरती- आकाश का कैसा नज़ारा होता है? इस दृश्य का वर्णन करो।

2. "यदि सूर्य न होता.." इस विषय पर एक छोटा- सा निबंध लिखो।

चाचाजी हमारे - 2

ढूंढ के लाते कुत्ते चिड़िया
जिन्हें लगी हो चोट
मलहम पट्टी करते उनकी
चाचाजी हर रोज़।

चाचाजी की डायरी का एक पन्ना

आज मुझे एक पिल्ला मिला। वह चितकबरा सा है, ज़्यादा बड़ा नहीं है पर शरीर से काफी तन्दुरूस्त लगता है। उसके सिर पर लंबा काला सा निशान है और पूंछ एक दम झबरी है। लेकिन इस पिल्ले के बायें पैर पर एक बड़ी गहरी सी चोट है - अगर थोड़ी ज़्यादा गहरी होती तो हड्डी तक पहुंच जाती।

पहले मुझे लगा था कि ये चोट किसी कुत्ते से लड़ाई में लगी होगी। लेकिन ध्यान से देखने पर लगा कि शायद ये कंटीले तार के कांटे से लगी है। घाव गहरा और लंबा है, ज्यादा पुराना नहीं है, जिसकी वजह से उसे साफ करने में परेशानी नहीं हुई।

शाम को मुझे अचानक एक सेही भी मिली। आज पहली बार सेही देखी, इसलिये ऊपर उसका चित्र भी बनाया है। हुआ ये कि जब मैं अब्बू खां के बगीचे से डाकखाने वाली सड़क पर आ रहा था कि दो तीन कुत्ते एक झाड़ी पर ज़ोर से भौंकते दिखाई दिये। देखा तो झाड़ी में एक सेही फंसी हुई थी। कुत्ते भौंक ज़रूर रहे थे लेकिन झाड़ी के कांटों की वजह से पास जाने में घबरा रहे थे।

बेचारी सेही की हालत काफी कमज़ोर सी थी। वो थोड़ा कांप भी रही थी। आज ही अब्बू खां ने अपने बगीचे में ज़हरीली दवा छिड़कवाई है। मुझे लगता है कि शायद सेही ने ज़हर वाली किसी चीज़ को खा लिया है।

पर सेही को वहां से लाया कैसे जाये? हाथ से तो उठा नहीं सकते। बड़ी मुश्किल से उसे एक लकड़ी के खोखे में बंद कर के लाया। यहां आकर सेही ने थोड़ा पानी पिया। मैंने उसकी जांच की और पानी में दवा मिला कर देने की कोशिश की। पहले तो उसने नहीं पिया, पर शायद प्यास ज़्यादा लगी थी, इसलिये थोड़ी देर बाद पी लिया। अब वो मेरे कमरे के एक कोने में आराम से सो रही है।

अभ्यास

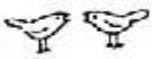

(क) क्या सही है छाँटकर लिखो।

पिल्ले की पूंछ .... है। *(काली, लाल, चितकबरी, झबरी)*

(ख) पिल्ले को चोट कैसे लगी?

(ग) पहले पानी देने पर भी सेही ने उसे क्यों नहीं पिया?

(घ) कुत्ते सेही पर क्यों भौंक रहे थे?

(च) सेही झाड़ी में कमज़ोर क्यों लग रही थी?

(छ) तुम्हारे साथ कल क्या हुआ? तुमने क्या किया? कल की अपनी डायरी नीचे लिखो।

चाचाजी की डायरी के आधार पर सेही के बारे में एक पैराग्राफ लिखो।

(ज) चाचाजी जानवरों को बचाने का प्रयास क्यों करते थे?

(झ) तुमने कभी घायल जीवों को देखा? क्या तुमने कुछ किया?

अग्निकांड

सो रहा था टोडूमल
कहें पड़ोसी- जाग!
धरी हुई थी घास की गंजी
उसमें लग गई आग।
नींद में बोला टोडूमल
मुझे नहीं है आना।
घास जले तो जल जाए
मुझे कौन है खाना।
आग कहां थी रुकने वाली
थोड़ी बढ़ गई आगे।
जल उठे अब धीरे-धीरे
खिड़की और दरवाजे।
दौड़ पड़े सब लाने पानी
कोई लाता रेता ।
टोडूमल था नींद का पक्का
अब तक न वो चेता।

धूं-धूं भर-भर, धुंआ कर-कर
आग वहां पे जलती।
हवा साथ में लपटें लेकर
ऊंची नीची करती।
लौट के आए जब पड़ौसी
पानी ढेर- सा झोंका।
तभी आ गया एक अचानक
तेज हवा का झोंका।
गरम हवा जब घर में लपकी
टोडूमल की खुल गई झपकी।
ली अंगडाई आंखें खोलीं
हो गी घर की तब तक होली।

● कॉपी में करो -

1. पड़ोसियों ने आग बुझाने के लिए क्या किया?

2. टोडूमल की नींद कैसे टूटी?

3. टोडूमल ने घास किसलिए रखी होगी? घास की गंजी में आग कैसे लग गयी होगी?

4. क्या तुम्हारे आसपास कभी ऐसा अग्निकांड हुआ? आग कैसे बुझाई गई थी?

5. टोडूमल ने जागने पर क्या देखा होगा? चित्र बनाओ।

6. टोडूमल ने जागने पर क्या किया होगा?

7. सबसे ज्यादा आग किस मौसम में लगती है? क्यों?

- आग किन-किन चीजों से जलाई जा सकती है? कम से कम ऐसी चार चीज़ों के नाम लिखो।

● करके देखो - एक प्रयोग

क्या तुमने कभी हैंडलैंस से आग जलाई है? जब धूप निकली हो तब गुरूजी की मदद से यह प्रयोग करके देखो। नीचे कुछ चीज़ों के नाम दिए हैं। उन चीज़ों को हैंडलैंस से जलाकर देखो और तालिका में लिखो। प्रयोग करने से पहले तालिका पढ़ लो, क्या-क्या लिखना है।

कपास, काला कागज़ , सफेद कागज, पन्नी, चाक, लकड़ी का टुकड़ा,
सूखा गोबर, धागा, ऊन, क्रेयांस (मोमकलर), अखबार का कागज़

चीज़ का नाम	जला/जली	नहीं जला/ नहीं जली	कब जला- 100 तक गिनती गिनो और देखो	
			100 के पहले	100 के बाद

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. आग बुझाने के कौन–कौन से तरीके प्रचलन में हैं? _____

_____

2. आग से जलने पर क्या करना चाहिए? _____

_____

3. कविता को अपने शब्दों में कहानी की तरह लिखो?

_____

_____

_____

_____

4. आग किस–किस काम में लायी जाती है? _____

_____

5. पहेलियाँ

1. एक नार ऐसी देखी पानी खाए मर जाये।
2. लाल छडी चपलता से पहाड़ चढ़ी।

आग के बारे में और पहेलियाँ बनाकर आपस में पूछो

6. " ी " की मात्र लगाकर अर्थ समझो। दोनों शब्दों के अर्थों में क्या फर्क हो जाता है। इस पर कक्षा में बातचीत करो।

लपक– लपकी

किताब	————	गंज	————	पड़ोस	————	नीच	————
पक्का	————	फर्श	————	जलता	————	पूर	————
साथ	————	ढेर	————	गरम	————	झूठ	————

दोनों तरह के इस्तेमाल के वाक्य बनाओ

गरम – रोटी गरम है, कैसे खाऊँ! **गरमी**– उफ! कितनी गरमी है, जरा हवा तो कर दो।

_____

_____

_____

_____